International Journal of History and Culture
E-ISSN: 3048-8699
https://www.journalofhistory.in/
Volume 1; Issue 1; January to March 2025; Page No. 13-16
Peer Review, Indexed and Refereed Journal

गांधी और वैश्विक न्यायः वैश्वीकरण के लाभों और विषमताओं पर एक गांधीवादी दृष्टिकोण

डा. सुनीता बघेले
सहायक प्राध्यापक
राजनीति शास्त्र,
भगवान विरसा मुंडा शासकीय महाविद्यालय,
दिव्यगवा, रीवा मध्य प्रदेश

सारांश

21वीं सदी का प्रमुख वैश्विक चलन 'वैश्वीकरण' है, जिसने विश्व के कोने–कोने को जोड़ते हुए अर्थव्यवस्था, संस्कृति, तकनीक और राजनीति के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन लाया है। परंतु यह परिवर्तन समान रूप से न्यायपूर्ण नहीं रहा। एक ओर जहां वैश्वीकरण ने अनेक अवसर प्रदान किए हैं, वहीं दूसरी ओर इसने सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय विषमताओं को भी गहरा किया है। इस संदर्भ में महात्मा गांधी का विचारधारा आधारित दृ ष्टिकोण, विशेष रूप से उनका 'ग्राम स्वराज' का सिद्धांत, आज भी वैश्विक न्याय के लिए एक नैतिक मार्गदर्शक के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। वैश्वीकरण एक निर्विवाद वास्तविकता है जिसे न तो अनदेखा किया जा सकता है और न ही पूरी तरह अस्वीकार किया जाना चाहिए। परंतु इसका स्वरूप और दिशा कैसी होकृयह सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है। गांधीजी का दृष्टिकोण वैश्वीकरण की विषमताओं का समाधान नैतिकता, सादगी, आत्मनिर्भरता और न्यायसंगत वितरण में देखता है। ऐसे में गांधीवाद आज भी वैश्विक न्याय की तलाश में एक जीवंत और सशक्त दर्शन के रूप में हमारे समक्ष है।

मुख्य शब्दः *गांधी, वैश्वीकरण, लाभों, विषमता*

प्रस्तावना

21वीं सदी का प्रमुख वैश्विक चलन 'वैश्वीकरण' है, जिसने विश्व के कोने–कोने को जोड़ते हुए अर्थव्यवस्था, संस्कृति, तकनीक और राजनीति के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन लाया है। परंतु यह परिवर्तन समान रूप से न्यायपूर्ण नहीं रहा। एक ओर जहां वैश्वीकरण ने अनेक अवसर प्रदान किए हैं, वहीं दूसरी ओर इसने सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय विषमताओं को भी गहरा किया है। इस संदर्भ में महात्मा गांधी का विचारधारा आधारित दृष्टिकोण, विशेष रूप से उनका 'ग्राम स्वराज' का सिद्धांत, आज भी वैश्विक न्याय के लिए एक नैतिक मार्गदर्शक के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

वैश्वीकरणः परिभाषा और वर्तमान परिप्रेक्ष्य

वैश्वीकरण का सामान्य अर्थ है कि पूरी दुनिया को एक वैश्विक गाँव के रूप में देखना, जहाँ वस्तुएँ, सेवाएँ, पूंजी, सूचना और मानव संसाधन निर्बाध रूप से सीमाओं के पार प्रवाहित होते हैं। यह प्रक्रिया बहुराष्ट्रीय कंपनियों, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं (जैसे IMF, WTO, World Bank), तथा तकनीकी नवाचारों द्वारा संचालित होती है। हालांकि, वैश्वीकरण ने अनेक विकासशील देशों में आर्थिक विकास की गति को बढ़ाया है, लेकिन इसके लाभ असमान रूप से वितरित हुए हैं। गरीब और पिछड़े समुदाय इसके लाभों से वंचित रहे हैं, जबकि अमीर वर्ग और पूंजीवादी शक्तियाँ अधिक सशक्त हुई हैं (Stiglitz: 2002, p- 67)।

गांधी का विचार और वैश्वीकरण

महात्मा गांधी का चिंतन किसी विशिष्ट युग का सीमित दृष्टिकोण नहीं था, बल्कि यह एक सार्वकालिक और सार्वभौमिक नैतिक दर्शन है। गांधीजी ने जीवन भर ''स्वदेशी'', ''सत्य'', ''अहिंसा'', ''सादगी'' और ''ग्राम स्वराज'' जैसे सिद्धांतों को जीवन में उतारने की बात की। उनका विश्वास था कि आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्वतंत्रता तभी सार्थक है जब वह सबसे अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को भी न्याय दे सके। गांधीजी ने औद्योगिक सभ्यता और उपभोक्तावाद की आलोचना करते हुए 'प्रकृति के साथ सामंजस्य' और 'आत्मनिर्भर समुदाय' की वकालत की थी (Gandhi: 1938, p. 40)। उनकी दृष्टि में कोई भी विकास उस समय तक न्यायसंगत नहीं हो सकता जब तक वह अंतिम व्यक्ति के जीवन में सुधार न लाए।

वैश्वीकरण के लाभः गांधीवादी दृष्टिकोण से विश्लेषण

तकनीकी नवाचार और संचारः वैश्वीकरण ने सूचना और संचार के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। इंटरनेट, मोबाइल और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने जानकारी की पहुँच को लोकतांत्रिक बना दिया है। गांधीजी इसे ज्ञान के प्रसार का माध्यम मान सकते थे, बशर्ते इसका उपयोग नैतिकता और सेवा के भाव से हो। वैश्विक सहयोग और शांति की संभावनाः गांधीजी 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना में विश्वास रखते थे। वैश्वीकरण के माध्यम से देशों के बीच आपसी निर्भरता बढ़ी है, जो अंततः वैश्विक सहयोग और शांति की दिशा में अग्रसर कर सकती है।

वैश्वीकरण की विषमताएँ और गांधीवादी आलोचना

आर्थिक असमानताः वैश्वीकरण से अमीर देशों और निगमों की संपत्ति में अप्रत्याशित वृद्धि हुई, जबकि गरीब देश और समुदाय अधिक शोषित हुए। गांधीजी ने स्पष्ट रूप से कहा थाकृ"पृथ्वी हर व्यक्ति की आवश्यकता को पूरा करने में समर्थ है, पर किसी एक के लोभ को नहीं" (Gandhi: p. 109)। अतः उनका मॉडल न्यायोचित वितरण और आर्थिक समानता पर आधारित था।

पर्यावरणीय संकटः वैश्वीकरण–प्रेरित औद्योगीकरण ने प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया है, जिससे जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, और जैव विविधता की हानि जैसे संकट उत्पन्न हुए हैं। गांधीजी प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करने के पक्षधर थे।

संस्कृति का क्षरणः उपभोक्तावाद और पश्चिमी प्रभाव ने स्थानीय संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं को हाशिए पर डाल दिया है। गांधीजी ने 'स्वदेशी' को केवल वस्त्र या उद्योग तक सीमित न रखते हुए सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता का प्रतीक माना था (Parel: 2006, p. 87)।

गांधीवादी समाधान और संभावनाएँ

ग्राम स्वराजः गांधीजी का 'ग्राम स्वराज' मॉडल वैश्विक न्याय के लिए एक वैकल्पिक विकास मॉडल प्रस्तुत करता है। इसमें सत्ता का विकेंद्रीकरण, स्थानीय संसाधनों का उपयोग, और आत्मनिर्भर समुदाय की अवधारणा प्रमुख है। नैतिक पूंजीवाद और उद्यमिताः गांधीजी ने 'ट्रस्टीशिप' का सिद्धांत दिया, जिसके

अनुसार पूंजीपति को अपनी संपत्ति समाज की भलाई के लिए उपयोग करनी चाहिए। आज की कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) इसी विचार की छाया है। शिक्षा और नैतिकताः गांधीजी की 'नैतिक शिक्षा' पर जोर देने वाली प्रणाली आज वैश्विक समाज में नैतिक नेतृत्व के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। वैश्वीकरण का उत्तर है 'स्थानीयकरण'कृ स्थानीय उत्पादन, स्थानीय खपत और स्थानीय निर्णय। यह सिद्धांत वैश्विक न्याय सुनिश्चित करने का एक व्यावहारिक तरीका हो सकता है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण एक निर्विवाद वास्तविकता है जिसे न तो अनदेखा किया जा सकता है और न ही पूरी तरह अस्वीकार किया जाना चाहिए। परंतु इसका स्वरूप और दिशा कैसी होकृयह सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है। गांधीजी का दृष्टिकोण वैश्वीकरण की विषमताओं का समाधान नैतिकता, सादगी, आत्मनिर्भरता और न्यायसंगत वितरण में देखता है। ऐसे में गांधीवाद आज भी वैश्विक न्याय की तलाश में एक जीवंत और सशक्त दर्शन के रूप में हमारे समक्ष है।

संदर्भ सूची (References)

Gandhi, M. K. (1938). *Hind Swaraj or Indian Home Rule*. Ahmedabad: Navajivan Publishing House. p. 40.

Gandhi, M. K. (1968). *Collected Works of Mahatma Gandhi*, Vol. 28. New Delhi: Publications Division, Government of India. p. 109.

Nanda, Meera. (2009). *The God Market: How Globalization is Making India More Hindu*. New Delhi: Random House India.

Parel, Anthony J. (2006). *Gandhi's Philosophy and the Quest for Harmony*. Cambridge: Cambridge University Press. p. 87.

Steger, Manfred B. (2013). *Globalization: A Very Short Introduction*. Oxford: Oxford University Press.

Stiglitz, Joseph E. (2002). *Globalization and Its Discontents*. New York: W. W. Norton & Company. p. 67.